www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

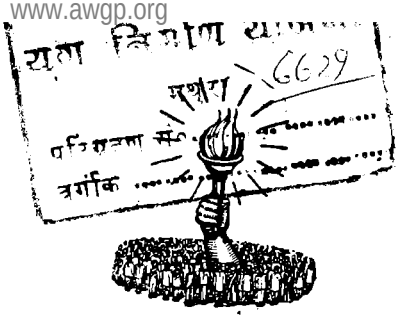

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सत्संग प्रयोजन के तीन उपकरण

—ब्रह्मवर्चस्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्संग प्रयोजन के तीन उपकरण

यह विज्ञान का युग है। आविष्कारों ने इन दिनों अनेकानेक सुविधा साधन उपलब्ध कराये हैं। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो लोक मानस को प्रशिक्षित करने के काम आते हैं। प्रेस के अविष्कार ने प्रशिक्षण स्वाध्याय सरल बना दिया है। पुरातन काल में पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं और सिर पर लाद कर इधर से उधर ले जाई जाती थीं। अब वह कार्य प्रेस, अखबार, पुस्तक, प्रकाशक, विक्रेता मिलकर सस्ते में सरलता पूर्वक संपन्न कर देते हैं। इसी प्रकार सत्संग परामर्श की आवश्यकता स्लाइड प्रोजेक्टर, टैप रिकार्डर और लाउडस्पीकर का त्रिगुण मिलकर सरलता पूर्वक संपन्न कर लेता है। प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत लोक मानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन का जो व्यापक कार्यक्रम चल रहा है उसके लिए इन तीनों की आवश्यकता है। स्वाध्याय के लिए जिस प्रकार प्रज्ञा साहित्य का, झोला पुस्तकालय एवम् ज्ञान रथ का प्रयोग होता है ठीक उसी प्रकार सत्सङ्ग का प्रयोजन पूरा करने के लिए इन तीनों को खरीदने और उपयोग करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

इन तीनों का संयुक्त मूल्य दो हजार के लगभग रहे ऐसे प्रबन्ध निर्माताओं पर दबाव डालकर कराया गया है। उनने लोक मंगल की बात को ध्यान में रखते हुए नाम मात्र के मुनाफे पर प्रज्ञा संगठनों को उपलब्ध कराने की उदारता दिखाई है।

इन दिनों सिनेमा और रेडियो टेलीविजन द्वारा व्यापक प्रचार कार्य चलता है। यह साधन सरकार एवम् पूंजीपतियों के हाथ में है। उन्हें तो उपलब्ध नहीं कराया जा सकता किन्तु मिनी सिनेमा के रूप में स्लाइड प्रोजेक्टर और मिनी रेडियो के रूप में टैप रिकार्डर का प्रयोग हो सकता है। लाउडस्पीकर साथ में जुड़ जाने से उनका लाभ अपेक्षाकृत अधिक लोग उठा सकते हैं।

सिनेमा, टेलीविजन और वी.डी.यो. में देखे जाने वाले रंगीन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

बोलते चल चित्रों को छोटे देहातों को छोड़कर बहुतों ने देखा है। इस-लिए उनकी तुलना में स्लाइड प्रोजेक्टर का प्रदर्शन बौना और भोंड़ा लगना स्वाभाविक हैं। कभी उनका जमाना था जब चाय वाले गांवों में कार्बाइड गैस के सहारे प्रकाश देने वाले स्लाइड प्रोजेक्टर लेकर गाँव-गाँव फिरते थे और अपने उत्पादन के गुणगान करके लोगों को पीने के लिए ललचाते थे। अब तो चाय इतनी प्रख्यात है कि घरों में प्रातःकाल सर्व-प्रथम उसी का चरणामृत लिया जाता है। अच्छी दुकानों पर ग्राहकों की लाइन खड़ी रहती है। ऐसी दशा में चाय कम्पनियों ने भी प्रचार छोड़ दिया। जो करती हैं वे सिनेमाओं में छोटे फिल्म भर दिखाती हैं।

फिर भी प्रज्ञा अभियान ने क्यों स्लाइड प्रोजेक्टर को महत्व दिया और उसे अपनी प्रचार प्रक्रिया के पांच प्रमुख माध्यमों में एक माना, यह विशेष रूप से विचारणीय है। इसकी तुलना सिनेमा से की जाय तो ही उसे महत्वहीन माना जायेगा किन्तु यदि यह देखा जाय कि यह सचित्र लोक शिक्षण है तो उसकी उपयोगिता किसी भी प्रकार कम नहीं आंकी जा सकती। इसे वस्तुतः चित्र प्रदर्शनी के स्तर का एक हल्का और सस्ता उपकरण कहा जा सकता है। सरकारी प्रचार विभाग अभी भी मेला आयोजनों में परिवार नियोजन, समाज कल्याण आदि प्रसंगों की उप-योगिता तथा प्रगति की जानकारी सर्व साधारण तक पहुँचाने के लिए सजे-धजे प्रशिक्षित कर्मचारियों के दल समेत इसके प्रबंध करती-पंडाल लगाती है। दर्शकों को चित्र दिखाये और उनके साथ बताने वालों द्वारा संदर्भ बताये जाते हैं।

स्लाइड प्रोजेक्टर वस्तुतः चित्र प्रदर्शनी का ही एक रूप है। सिनेमा के साथ उसकी तुलना करना संगति जोड़ना सर्वथा निरर्थक है। दोनों के स्वरूप और कलेवर में मौलिक भिन्नता है। सिनेमा में टिकट लेना और इन्तजार करना पड़ता है। टेलीविजन लगाने के लिए भी ढेरों पैसा, बिजली खर्च, टैक्स आदि की आवश्यकता पड़ती है। जब कि स्लाइड प्रोजेक्टर घरों में, गली मुहल्लों में प्रज्ञा प्रचारकों द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिखाने का प्रबंध अपनी ओर से ही कर दिया जाता है। कौतूहल तो कौतूहल जो ठहरा। जब रीछ, बन्दर, सांप, बाजीगरी के तमाशे देखने के लिए बिना किसी पूर्व सूचना या योजना के ठट्ठ के ठट्ठ जुड़ जाते हैं तो कोई कारण नहीं कि स्लाइड प्रोजेक्टर के तमाशे की बात सुनकर गली मुहल्लों की जनता सहज ही एकत्रित न होती रहे। अनुभव ने बताया है कि इस प्रदर्शन की एक घन्टे पूर्व भी सूचना मिल सके तो पास पड़ोस के सौ दो सौ लोग सहज ही हर जगह इकट्ठे हो जाते हैं।

कथा कहानियाँ सुनने-चित्र विचित्र घटनाएँ देखने की मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। पर्यटन तीर्थ यात्रा, मेले ठेले जैसे प्रचलन इसी आधार पर बने और चले हैं कि इस प्रवास में कुछ नया देखने सुनने को मिले। यह आवश्यकता स्लाइड प्रोजेक्टरों के सहारे भली प्रकार पूरी होती है। इसके माध्यम से जो चित्र दिखाये जाते हैं उनके आगे पीछे कुछ कथा प्रसङ्ग भी जुड़ा रहता है। प्रदर्शनकर्त्ता उसे सुनाता चलता है फलतः कहानी सुनने की तथा प्रत्यक्ष दृश्य साथ-साथ देखने की दुहरी आवश्यकता एक साथ पूरी होती रहती है। अधिक उपस्थिति होने पर छोटे लाउड-स्पीकर का प्रयोग किया जाता है फलतः अधिक लोग अधिक अच्छी तरह प्रवचनकर्त्ता की व्याख्या-विवेचना सुनते चलते हैं। इस प्रकार सत्संग के लिए जन समुदाय एकत्रित करने जैसी सहज व्यवस्था बन जाती है। सत्संगों में रूखापन रहता है। दार्शनिक चर्चा हर किसी के गले नहीं उतरती इसलिए उनमें लोगों को इकट्ठा करने के लिए पुष्प फल मिलने जैसी बात कहनी पड़ती है। तब कहीं कुछ धर्म प्रेमी प्रवृत्ति के लोग जमा हो पाते हैं। इसके विपरीत स्लाइड प्रोजेक्टर द्वारा नियोजित सत्संग में नर-नारी बाल-वृद्ध सभी उस कौतुक का आनन्द लेने के लिए खबर मिलते ही दौड़ पड़ते हैं और आदि से अन्त तक पूरी बात सुनते तथा दृश्य प्रदर्शन को रुचि पूर्वक देखते रहते हैं।

सत्संग के निमित्त अनेकों निर्धारण कार्यक्रम एवम् प्रयोगों को विज्ञजनों द्वारा अपनाया जाता रहा है। धर्म प्रसंग के नीरस लगने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदत पर किसी प्रकार काबू पाने के लिए सत्संग को आकर्षक बनाने का भी यथा संभव प्रयत्न चलता रहा है। स्लाइड-प्रोजेक्टर के अभिनव प्रचलन को भी इसी दृष्टि से देखा-जाना जाय। उसे सत्संग प्रकृति का मानना चाहिए। सिनेमा, टेलीविजन से उसकी तुलना ऐसा ही है जैसा गाय को घोड़े के साथ तुलना करना। दोनों पशु वर्ग में आते है पर उनके प्रयोग एवं लाभ सर्वथा भिन्न हैं। सिनेमा को घोड़ा और स्लाइड प्रोजेक्टर को गाय माना जाय तो वस्तु स्थिति को समझने में सहायता मिल सकती है।

युग शिल्पी प्रशिक्षण कार्यक्रम में इसे प्रमुख पाठ्यक्रम की तरह सम्मिलित रखा गया है। प्रदर्शन के साथ जो व्याख्या-विवेचना की जानी है उसे भी हर सेट के अनुरूप छाप दिया गया है। कुछ दिन इन पुस्तकों के आधार पर व्याख्या प्रवचन करने का अभ्यास घर पर कर लेने के उपरान्त वह योग्यता उपलब्ध हो जाती है जिसके सहारे धड़ल्ले के साथ बिना पुस्तिका के सहारे भी व्याख्या समेत प्रदर्शन संभव हो सके। अभ्यास के बिना अनायास ही जल्दबाजी में प्रदर्शन करने से व्याख्या लड़खड़ाने लगती है और सुशिक्षित भी उपहासास्पद बन सकता है। जब कि अभ्यास की प्रवीणता प्राप्त करने पर सामान्य शिक्षित भी कथन प्रवचन को बड़े सरस और हृदयग्राही ढंग से सम्पन्न करता रह सकता है।

देश में अनेक भाषाएँ हैं। प्रमुख भाषाओं को छोड़कर क्षेत्रीय भाषायें हैं जिनकी लिपियाँ भिन्न होने पर भी कथन में बहुत अन्तर एवम् उतार चढ़ाव रहता है। देहातों में विशेषतया यह अन्तर थोड़ी थोड़ी दूर पर दृष्टिगोचर होने लगता है। इतने पर भी स्लाइड प्रोजेक्टर प्रक्रिया पर इस भाषा भेद का कोई अंतर नहीं पड़ता। व्याख्याकार को चाहिए कि यदि शुद्ध हिन्दी में छपी व्याख्या पुस्तक से काम न चले तो क्षेत्रीय भाषा में उसका अनुवाद करके तदनुरूप अभ्यास करलें। इस प्रकार एक ही प्रोजेक्टर विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के लिए समान रूप से उपयोगी रह सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार लाउडस्पीकर हर प्रज्ञा संस्थान के लिए एक प्राथमिक आवश्यकता है उन्हें आये दिन लोक शिक्षण के लिए छोटे बड़े सत्संग आयोजन करने पड़ते हैं। मिशन की लोकप्रियता बढ़ते जाने से सहज ही उनमें उपस्थिति क्रमशः अधिक बढ़ती जा रही है। ऐसी दशा में लाउडस्पीकर का प्रबन्ध किये बिना प्रवक्ताओं की वाणी अधिक लोगों तक स्पष्टतया पहुँच सकना संभव नहीं। इस प्रयोजन के लिए एक निर्माता कम्पनी से कह कर बिजली और बैटरी से चलने वाला मध्यवर्ती साइज का फोल्डिंग लाउडस्पीकर बनवाया गया है। निर्माताओं ने उद्देश्य की उत्कृष्टता ध्यान में रखते हुए उसका मूल्य भी बाजार की तुलना में कुछ कम कर दिया है। इधर उधर ले जाने की दृष्टि से भी यह माडल सुविधा जनक है।

स्लाइड प्रोजेक्टर और लाउडस्पीकर के अतिरिक्त तीसरा उपकरण है-टैप रिकार्डर इसमें संगीत एवम् प्रवचन टैप कर लिए जाते हैं और आवश्यकतानुसार उन्हें उपस्थित समुदाय को सुना दिया जाता है। सत्सङ्ग की यह प्रक्रिया भी अपने स्थान पर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अब तक इस माध्यम से शांतिकुञ्ज की देव कन्याओं के युग गायन और सूत्र संचालक के कुछेक अति महत्वपूर्ण प्रवचन ही टैप करने और सुनाये जाने का प्रबंध हो सका है।

ग्रामोफोन कभी बहुत लोकप्रिय थे। रिकार्ड चाव से सुने जाते थे। पर अब उनका समय बीत गया। टैप रिकार्डर ने उनका स्थान ले लिया है। वह सस्ता भी है और सुलभ भी।

मिशन द्वारा टैप योजना को अगले दिनों अधिक व्यापक बनाने की तैयारी की जा रही है उनमें अनेक अवसरों पर प्रयुक्त होने वाले अनेक स्तर के संगीत भरे जाने की तैयारी की जा रही है। मूर्धन्य प्रवक्ता और विशेषतया मिशन के सूत्र संचालकों के वक्तव्य इस माध्यम से सर्व साधारण को उपलब्ध कराये जायेंगे। कथा कहानियाँ छोटे बच्चों से लेकर किशोरों, युवकों, अधेड़ों, वृद्धों में से प्रत्येक की रुचि एवम् आवश्यकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को ध्यान में रखते हुए टेप की जा रही हैं। प्रज्ञा पुराण कथा-जन्म दिवसोत्सवों में प्रयुक्त हो सकने योग्य प्रवचन आदि की नई टैप व्यवस्था की तैयारी इन्हीं दिनों चल रही है।

रामायण की नवाह्न पारायण कथा मोहल्लों, गोष्ठियों में पर्व आयोजनों की तरह लोक प्रिय हैं। प्रज्ञा पुराण की मर्मस्पर्शी कथाओं के पैंतालीस मिनट के नौ व्याख्यान इन्हीं दिनों तैयार किये गये हैं जिन्हें बारी-बारी से परिजनों, नये सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को सुनाते रहने का क्रम चलता रह सकेगा। कथाओं के माध्यम से न केवल बच्चों को वरन् विचारशील युवकों, प्रौढ़ों, महिलाओं को भी सत्संग का वह लाभ दे सकना सम्भव है जो स्वाध्याय प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। विभिन्न गुणों पर आधारित इन हृदयस्पर्शी प्रसंगों से न केवल सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण होता है वरन् दुष्प्रवृत्तियों से जूझने हेतु मन्यु भी उभरता है। टेपरिकार्डर के लोक प्रिय आधार को धुरी मानते हुए अगले दिनों नवरात्रि आयोजनों, नौ दिवसीय क्षेत्रीय सत्रों, पारिवारिक गोष्ठियों एवं विशिष्ट पर्वों पर प्रातः काल का कथा सुनने का क्रम चल निकलेगा। सायं काल स्लाइड प्रोजेक्टर द्वारा नौ दिन तक ३६ स्लाइडों के नौ सेट दिखाने पर दृश्य, श्रव्य, साधना का यह युगम ठीक बैठ जाता है। इसी बसंत से यह प्रक्रिया सब ओर चल पड़े, ऐसा सुयोग बन गया है एवं इसके लिए उपयुक्त साधन जुटाए जा रहे हैं।

व्यक्तिगत परामर्श विचार विनिमय के अतिरिक्त समूह गत प्रवचनों का अवलम्बन ही अपनाना पड़ता है। एक समय, एक प्रवक्ता द्वारा एक स्थान पर एकत्रित बड़े जन समुदाय को प्रशिक्षित कर सकना इसी माध्यम से बन पड़ता है। विचार गोष्ठियों और सम्मेलन-समारोहों की व्यवस्था बनाने का यही उद्देश्य है। इस प्रकार के प्रयासों को लोक मानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की दृष्टि से नितांत आवश्यक माना गया हैं।

परिजनों को यह तथ्य भली भाँति समझना चाहिए कि नये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिवार में प्रवेश करने एवं मिशन की प्रेरणाओं का प्रकाश फैलाने के लिए मात्र वैयक्तिक सम्पर्क ही काफी नहीं। जनरुचि को ध्यान में रखते हुए ऐसे साधनों की महती उपयोगिता है जिनके माध्यम से माहात्म्य पक्ष को किन्हीं प्रसंगों के माध्यम से उभारा समझाया गया हो। हरिश्चन्द्र के नाटक ने बालक मोहनदास के हृदय पर 'सत्य' की जो अमिट छाप डाली उसी की परिणति थी की उनके अन्दर का महामानव पक्ष विकसित हुआ, सत्य का पल्ला उन्होंने अन्त तक नहीं छोड़ा। नाटकों की तरह स्लाइडों व कथा प्रसंगों की भी अपनी जगह महत्ता है। आज लोकरंजन के नाम पर जिस घटिया मनोरंजन को चारों ओर छाया हम देखते हैं उसे निरस्त करने के लिए उतना ही सशक्त सत्प्रवृत्ति विस्तार का माहौल बनाना जरूरी है, उपरोक्त माध्यम उसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

सत्सङ्ग में दार्शनिक प्रवचन तो मनीषियों और ऋषि कल्प स्तर के लोगों के मध्य विशेष गोष्ठियों के रूप में ही होते हैं। किन्तु जहाँ सर्व साधारण के चिंतन चरित्र और व्यवहार में मानवोचित उत्कृष्टता बनाये रहने की आवश्यकता पूरी करने का सवाल है वह सार्वजनिक समारोह सत्सङ्गों की अनिवार्य आवश्यकता समझा जाता है और उसकी सामर्थ्य भर चेष्टा की जाती है। धार्मिक कर्मकाण्डों के साथ जुड़े हुए समारोहों में निर्धारित क्रियाकृत्यों की व्याख्या-विवेचना करते हुए पुरोहितों द्वारा प्रकारान्तर से सत्संग का उद्देश्य ही पूरा किया जाता है। महाप्रज्ञा गायत्री का दूरदर्शी तत्वज्ञान और पुण्य परमार्थ की यज्ञ परम्परा का कर्म विधान जीवन चर्या में उतारने के लिए ही यज्ञ आयोजनों का समारोह सम्पन्न होता है। इसके कृत्यों को गौण और प्रशिक्षण को प्रधान माना जाता है। सत्संग का महत्व और आवश्यकता को समझते हुए इस प्रकार के अनेकानेक विधि विधानों का भारतीय धर्म में सघन समावेश हुआ है। इसको ध्यान में रखते हुए युग शिल्पियों से अपेक्षा की गई है कि वे सत्संग प्रयोजन के इन तीनों ही माध्यमों का प्रयोग कर प्रज्ञा आलोक के विस्तार हेतु कदम बढ़ायेंगे।

प्रका० मुद्रक-युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य:-४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org